Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh **(July 2022). Contribution of Arya Samaj in social awakening**
International Journal of Economic Perspectives,16(7),157-164
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

सामाजिक जागरण में आर्य समाज का योगदान

Varsha Sain
Research Scholar
Amity University Rajasthan, Jaipur

Supervisor
Dr. Ashutosh Singh
Assistant Professor
Amity School of Liberal Arts
Amity University Rajasthan, Jaipur

शोध सारांश :

1875 ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की गयी। आर्य समाज द्वारा भारत में वैदिक संस्कृति पर आधारित समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया गया। आर्य समाज के प्रभाव से राजस्थान अछूता नहीं रह सका। राजस्थान में शिक्षा, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक आडम्बर, रूढ़ियाँ, स्त्री वैधव्य, शिशु बालिका हत्या जैसी अनेक कुरीतियाँ व्याप्त थीं, तत्कालीन स्थिति में आर्य समाज ने उक्त कुरीतियों को दूर करने का यत्न किया। तत्कालीन अजमेर–मेरवाड़ा में ईसाई मिशनरीज भी शैक्षिक व सामाजिक जागरण का कार्य कर रहे थे किन्तु उनके कार्य ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार प्रभावित थे। आर्य समाज द्वारा वैदिक संस्कृति व धर्म को संरक्षण प्रदान करते हुए शैक्षिक व सामाजिक जागरण का कार्य किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अजमेर–मेरवाड़ा में शिक्षा व समाज की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए उसमें आर्य समाज द्वारा सामाजिक जागरण के चरणों को इंगित करना है।

संकेताक्षर : शिक्षा, समाज, धर्म, कुप्रथाएं, जागरण

राजस्थान में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना अजमेर और जयपुर में की गयी थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती 5 मई, 1881 ई. में जयपुर से अजमेर पहुँचे। अजमेर में स्थानीय आर्य समाज (फरवरी, 1881 ई. में स्थापित) स्वामी जी के भाषणों और उपस्थिति से अधिक मजबूत होने लगा था। (सिंह, बाबा छज्जू, 1967 : 42) राजस्थान मे अजमेर–मेरवाड़ा की परिस्थितियाँ अन्य रियासतों की तुलना में सामाजिक एव शैक्षणिक सुधारों के लिए उपयुक्त एवं आशाजनक थी। ब्रिटिश शासन का एक हिस्सा होने के कारण अजमेर को अनेक फायदे मिले जैसे आधुनिक शिक्षा, नये रोजगार, वैधानिक ढांचा, प्रकाशन सुविधा, समाचार पत्र, जनसंस्थाएं आदि। ब्रिटिश शासन के प्रभाव के कारण 1818 ई. से ही अजमेर आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में परिवर्तित हो गया था। अजमेर में रेल परिवहन और रेल कारखाने के आरम्भ ने भी यह सिद्ध कर दिया कि अजमेर तकनीकी शिक्षा और शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र है। अजमेर ब्रिटिश संरक्षण में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। इसाई मिशनरियों ने हिन्दुओं के समक्ष अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजक चुनौतियाँ उत्पन्न की। आर्य समाज की स्थापना मिशनरियों द्वारा उत्पन्न की गयी इन चुनौतियों से निपटने के लिए की गयी।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***

Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

अजमेर में जहाँ ईसाई मिशनरी कार्यरत थे वहाँ मुख्य रूप से आर्य समाज की शाखायें खोली गयी जैसे 1884 ई. में ब्यावर, 1885 ई. में मसूदा, 1890 ई. में नसीराबाद, 1900–1901 ई. में पीसांगन, पुष्कर, केड़ल, लाडपुरा और सरधाना में। 1904 ई. में अजमेर–मेरवाड़ा में सनातन धर्म का प्रचार–प्रसार करने धर्माचार्य स्वामी प्रकाशानन्द जी पहुँचे। उन्होंने यहाँ पर संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। तत्पश्चात् जैन धर्म के धर्माचार्यों ने जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। मेरवाड़ा व उसके आसपास के क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों ने ईसाइयत का प्रचार करने के लिए लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित करवाकर वितरित की।

ईसा–ईसा बोल, क्या लगेगा मोल।
ईसा तेरा राम रमैया, ईसा तेरा कृष्ण कन्हैया।।

क्षेत्रीय भाषा में दोहे रचकर ऐंजिल्स की कहानियों को सरल भाषा में छपवाकर वितरित किया। पादरियों ने पहले नगरों में प्रचार शुरू किया लेकिन सफलता न मिलने पर ब्यावर व इसके आसपास के अभावग्रस्त गाँवों और पिछड़े क्षेत्रों में धर्म परिवर्तन करने लगे। ईसाई धर्म प्रचारकों ने हिन्दू समाज में संगठन की कमी, लोगों की निर्धनता, पिछड़ेपन और अशिक्षा आदि का लाभ उठाकर यहाँ अपने धर्म का खुलकर प्रचार किया। सूखे, अकाल और भुखमरी के समय भोजन और अन्य प्रलोभन देकर उन्हें ईसाइयत की ओर आकर्षित किया। (कार्टिन, हेनरी, नारायण, गणेश, 1905 : 255) अजमेर–मेरवाड़ा में इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु गिरजाघरों और मिशन स्कूलों की संख्या में वृद्धि की गयी। (एण्ड्रयूज, सी, 1955 : 119) आलोच्य क्षेत्र में ईसाईयों के धर्म प्रचार एवं धर्म परिवर्तन के विरूद्ध प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। आर्य समाज आंदोलन उसकी मुखर अभिव्यक्ति थी। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक तक अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज एवं आक्रामक रूप ग्रहण कर चुका था। (हेमसैथ, एच. चार्ल्स, 1964 : 301) इसने बढ़ते हुए ईसाइयत के प्रभाव का विरोध करने के लिए जनता का आह्वान किया जिससे ईसाई प्रचारक आर्य समाज को अपने प्रचार कार्य में बाधक समझने लगे और धर्म प्रचारक आर्य समाज को अपने प्रचार कार्य में बाधक समझने लगे और दोनों एक–दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी होते गए। ईसाई मिशनरियों का मुख्य लक्ष्य हिन्दुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना था तो आर्य समाज का लक्ष्य प्राचीन हिन्दू संस्कृति को पुनर्स्थापित करना था। आर्य समाज ने ईसाई मिशनरियों के विरूद्ध ही कार्य नहीं किया वरन् ईसाइयों द्वारा बनाए गए हिन्दू ईसाईयों को शुद्ध कर हिन्दू धर्म में पुनः प्रवेश करवाया। मिशनरियों ने आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन को ईसाई धर्म विरोधी आंदोलन कहा।

19वीं शताब्दी के मेरवाड़ा में मुसलमान चीतों का धर्म परिवर्तित कर रहे थे वहीं रावत और मेढ़ जाति में मिशनरी अपना प्रभाव स्थापित कर रहे थे। (शर्मा, हरिकिशन, 1941 : 6) ईसाई लोग दलित व पिछड़े वर्ग को आर्थिक तथा अन्य माध्यमों से प्रलोभन देकर अपने धर्म में प्रविष्ट करा रहे थे।

आर्य समाज की धारणा थी कि हिन्दू समाज के उच्च वर्ग द्वारा किए गए तिरस्कार ने दलितों को दूसरे धर्म की ओर उन्मुख किया। (शर्मा, हरिकिशन, 1941 : 8) स्थानीय आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन द्वारा पिछड़े व दलित समाज को सम्मानजनक स्थान दिलाने में पहले की ओर हिन्दू समाज में विघटन का प्रक्रिया को रोका। आर्य समाज ने इस वर्ग के उत्थान के लिए कई कार्यक्रम अपनाए जैसे यज्ञापवीत देकर उन्हें द्विजा की श्रेणी में लाना, वेदों के पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार देना और उनके साथ खान–पान करना आदि। (राजस्थान वैदिक यन्त्रालय, 1899) शुद्ध हुए व्यक्ति का नामकरण संस्कार हिन्दू समाज में प्रचलित शब्दों के अनुसार कर समाज में समान स्तर प्रदान किया जाता था किन्तु सन् 1922 क बाद शुद्धि के साथ हिन्दू संगठन के आंदोलन को अधिक व्यवहारिक बनाने के लिए आर्य समाज ने दस नियमों के पालन की शर्त को हिन्दू संस्कृति की रक्षा के लिए समाप्त कर शुद्धि कार्य को और भी लचीला बना दिया। इससे आर्य समाज ने इस आंदोलन को व्यापक बनाने के लिए जातिगत समुदायों का सहयोग लेना शुरू कर दिया। (शर्मा, हरिकिशन, 1941 : 7)

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***
Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

राजस्थान में आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन का केन्द्र अजमेर–मेरवाड़ा ही रहा। रियासतों में रूढ़िवादियों, ईसाइयों और मुसलमानों का प्रभाव होने से स्थानीय आर्य समाज शुद्धि के लिए लोगों को अजमेर–मेरवाड़ा भी भेजती थी जहाँ उन्हें हिन्दू समाज में प्रविष्ट करवाने के लिए वैदिक धर्म में दीक्षित किया जाता था। सन् 1883–1922 तक आर्य समाज का शुद्धि आन्दोलन व्यक्तिगत स्तर तक सीमित था किन्तु 1923 ई. में स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान हिन्दू सभा अजमेर के साथ 1923 ई. में मिलकर सामूहिक शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसका प्रमुख उद्देश्य शुद्धि के साथ समाज में एकता और संगठन की भावना उत्पन्न करना था।

आर्यसमाज द्वारा अजमेर–मेरवाड़ा व इसके आसपास के क्षेत्रों में अनेक जनकल्याणकारी कार्य किए। सूख, अकाल, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों तथा मेलों में बिछड़े व असहाय बालकों, विधवाओं और स्त्रियों को आर्य समाज के अनाथालय और वनिता आश्रम में भेजा जाता था। ब्यावर पर आसपास के गाँवों में चांदकरण शारदा, पण्डित जियालाल व खरवा नरेश राव गोपालसिंह ने मिलकर चितों, मेहरातों एवं रावतों में शुद्धि आंदोलन को विस्तृत किया। (शारदा, चांदकरण, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, 17 अक्टूबर व 25 अक्टूबर 1929*)* परिणामतः सन् 1931 ई. की जनगणना रिपोर्ट में इन जातियों ने स्वयं को सुन्नी मुसलमान और ईसाई के स्थान पर हिन्दू राजपूत बिरादरी का होना लिखवाया। (*सेन्सज रिपोर्ट ऑफ मेरवाड़ा,* 1931, ई. : 25, 26) सन् 1933 में ब्यावर में भ्रातृत्व सम्मेलन का आयोजन कर शुद्धि आंदोलन को प्रोत्साहित किया गया। (राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा, अजमेर, *पंचवर्षीय विवरण,* नवम्बर, 1935 से 1940 ई. : 5, 6)

स्वामी दयानन्द सरस्वती 1881 ई. में अजमेर–मेरवाड़ा के ब्यावर तथा मसूदा आदि क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए उन्होंने शिक्षित युवाओं को 'वेदों की और लौटो' का नारा देकर आत्मचिन्तन के लिए प्रेरित किया। (शारदा, हरबिलास, 1943 : 110) अजमेर में राजस्थान को आर्य समाजों की प्रांतीय स्वरूप देने के लिए दिसम्बर 1888 ई. में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान मालवा की स्थापना हुई जिसके संस्थापक रामविलास शारदा, हरबिलास शारदा, लाला हरबक्षी चण्डक, डॉ. कृष्णलाल, मास्टर वजीरचन्द व ठाकुर पंचमसिंह वर्मा आदि थे। सन् 1888 ई. में यह सभा प्रान्त की बारह आर्य समाजों के निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक संगठित संस्था थी। प्रांत की सभी आर्य समाज अपनी वार्षिक आय का दशमांश सभा को उसके कार्यों के संचालन के लिए देती थी। (आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 1989–90 : 1–3) इस सभा का पंजीयन 13 अक्टूबर, 1896 को पंजीयन अधिनियम सन् 1860 ई. के अन्तर्गत हुआ। ((आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान *वार्षिक रिपोर्ट, 1996–97* : 1)

19वीं शताब्दी में अजमेर व मेरवाड़ा में आर्य समाज का शैक्षिक आन्दोलन प्रारम्भ होने से पूर्व परम्परागत और आधुनिक दोनों शिक्षा पद्धतियाँ प्रचलित थीं। (ढोंढियाल, बी.एन., 1974 : 369, 370) ब्रिटिश अधिकारियों ने ब्रिटिश साम्राज्य की राजनीतिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आधुनिक शिक्षा पर बल दिया। व्यवसायी तथा नौकरीपेशा वर्ग ने अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से प्रगति करने और अंग्रेजों की कृपा प्राप्त करने की आशा से उसमें रूचि प्रदर्शित की थी। सरकारी नौकरी में अंग्रेजी शिक्षा की अनिवार्यता ने भी लोगों को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने पर मजबूर किया। (नरूला एण्ड नायक, 1964 : 4)

19वीं शताब्दी में अजमेर–मेरवाड़ा में सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र में स्त्रियां पिछड़ी हुई थी। समाज में प्रचलित सभी परम्परागत सामाजिक कुरीतियाँ व कुप्रथाएं प्रायः स्त्रियों से सम्बन्धित थी। इस समय स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के लिए जागृति लाना आवश्यक था। स्त्रियों को वेदाध्ययन, यज्ञ हवन, यज्ञोपवीत संस्कार और शिक्षा प्राप्ति का अधिकार देकर आर्य समाज ने शैक्षिक व व्यापारिक समुदायों की स्त्रियों को आर्यसमाज ने सामाजिक पुनरूत्थान के लिए प्रेरित किया। उनमें वैदिककालीन सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चेतना तथा कुरीतियों का विरोध करने की आत्मशक्ति उत्पन्न करने के लिए स्थान–स्थान पर आर्य समाज की स्थापना हुई। इसी क्रम में 26 दिसम्बर, 1904 ई. को अजमेर में पहली बार गुलाबदेवी माहेश्वरी ने स्त्रियों में संगठन की प्रवृत्ति जाग्रत करने के लिए स्त्री आर्य समाज की स्थापना की।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***
Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज ने दयानन्द सरस्वती की स्मृति में डी.ए.वी. आन्दोलन चलाया। साथ ही स्त्रियों में शैक्षिक जागृति, संगठन की भावना उत्पन्न करने तथा उनके प्रति सामाजिक मनोवृत्ति में बदलाव लाने के लिए आर्य कन्या पाठशाला आन्दोलन चलाया गया। ब्यावर में आर्य समाज ने स्त्रियों में आत्म विश्वास, आत्म चेतना, स्वावलम्बन व गृहकलाओं के प्रशिक्षण की प्रवृत्ति उत्पन्न करने के लिए तीन आर्य कन्या पाठशालाएं स्थापित की, जिनमें निःशुल्क शिक्षा के द्वारा अक्षर ज्ञान करवाने के साथ हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति छात्राओं म जिज्ञासा उत्पन्न की गई।

इस प्रकार आर्य समाज और आर्य कन्या पाठशालाओं ने अजमेर–मेरवाड़ा में महिलाओं में पारम्परिक एकता और संगठन की प्रवृत्ति जाग्रत कर सामाजिक कुरीतियों के विरोध व प्रतिवाद की क्षमता उत्पन्न की। जुलाई, 1928 ई. में कौशल्यादेवी, सुभद्रादेवी, सुखदादेवी तथा मनोरमा देवी आदि ने पर्दा निवारक मण्डली अजमेर की स्थापना की। (आर्य स्त्री समाज, *अजमेर, रिपोर्ट 1928–29*, ई. : 12) जनवरी 1930 ई. में दिल्ली में अखिल भारतीय महिला परिषद् सम्मेलन में अजमेर आर्य स्त्री समाज की ओर से पार्वती सारदा, सुखदा सारदा, सावित्री देवी एवं गुलाबदेवी ने अजमेर ब्यावर का प्रतिनिधित्व किया। इससे स्त्रियों में सामाजिक पुनरूत्थान की चेतना जाग्रत हुई।

अजमेर–मेरवाड़ा में उन्नीसवीं सदी में परम्परागत सामाजिक ढांचे में निम्न वर्ग की स्थिति शोचनीय थी। उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जाता था। उन्हें अध्ययन–अध्यापन, धार्मिक और सामाजिक कर्मकाण्डों में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ईसाई प्रचारकों ने निम्नवर्ग की इस अज्ञानता, निर्धनता और हिन्दू समाज में उपेक्षापूर्ण स्थिति का लाभ उठाया। आर्यसमाज ने क्षेत्र में बढ़ते हुए ईसाइयत के विरूद्ध दलितोद्धार आन्दोलन चलाकर उन्हें वेदाध्ययन, यज्ञ, हवन, मन्दिर प्रवेश, जनेऊ धारण और शिक्षा ग्रहण करने के सामाजिक अधिकार प्रदान करवाये। ब्यावर व उसके आसपास के क्षेत्रों में आर्य अछूतोद्धार संगठन बनाकर तथा अछूत जाति में यज्ञोपवीत देकर समानता की भावना उत्पन्न की। ((आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, *फाईल न. 12*, नवम्बर 1904 से दिसम्बर, 1905 तक) 1934 ई. में मेरवाड़ा क्षेत्र के अनाथालयों और डी.ए.वी. स्कूल के लड़कों व स्त्री आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अछूत बस्तियों में जाकर सफाई एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य किए। ब्यावर में अजमेर से 10 अनाथ बालकों को भेजकर मई, 1930 ई. में हिन्दू अनाथालय, ब्यावर में खोली गई। (श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर की *वार्षिक रिपोर्ट, 1932–33* : 3–4)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यह महसूस किया कि राजपूताने में निम्न वर्ग व महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। इसलिए उन्होंने 1878 ई. में राजपूताना में सर्वप्रथम धार्मिक, सामाजिक व राजनीति पुनर्जागरण आंदोलन की शुरूआत की। राजपूताने के लोगों में दयानंद सरस्वती एवं उनके आर्य समाज ने चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। परिणामतः 1883 ई. तक राजपूताना की कई रियासतों में आर्य समाज की शाखाये स्थापित हो गई एवं वे विभिन्न पहलुओं से सम्बद्ध अपनी सेवाओं का निर्वहन करती रही।

शैक्षिक जागृति और आर्य समाज

19वीं शताब्दी के मध्य में राजस्थान सहित अजमेर–मेरवाड़ा में जो पुराने ढंग को पाठशालाएं विद्यमान थीं, उनमें केवल उच्च वर्णों के विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उच्च वर्णों में प्रधानतया ब्राह्मण ही इन पाठशालाओं में संस्कृत भाषा तथा व्याकरण आदि का अध्ययन किया करते थे। सर्वसाधारण जनता को शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों का उस समय अभाव था। राजपूत राज्यों पर ब्रिटिश संरक्षण के बाद आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भिक प्रसार ईसाई मिशनरियों द्वारा किया गया, जिनका उद्देश्य अपनी शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करना था। राजस्थान की रियासतों के राजकुमारों, ठाकुरों, जागीरदारा आदि कुलीन वर्ग में अंग्रेजी साहित्य व संस्कृति के प्रति रूचि उत्पन करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने नवम्बर, 1875 ई. में अजमेर ब्रिटिश प्रान्त में 'मेयो कॉलेज' की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्हें

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***
Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार तथा तर्कशैली में अंग्रेज बनाने का प्रयत्न किया गया। इस दशा में आर्य समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक नवयुग का प्रारम्भ किया गया और ऐसी शिक्षण संस्थाएं स्थापित की गई जिनमें सभी वर्णों व जातियों के बालक प्रवेश पा सकते थे और जिनमें संस्कृत भाषा, वेदशास्त्र तथा प्राचीन साहित्य के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के अध्यापन की भी समुचित व्यवस्था थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य था कि शिक्षा सबके लिए है। समाज के किसी भी वर्ग को वे विद्या से वंचित नहीं रखना चाहते थे, स्त्रियों और शूद्रों को भी वे विद्या ग्रहण का अधिकारी मानते थे। उनका मानना था कि "जन्म से सब कोई शूद्र होते हैं, शिक्षा और संस्कार द्वारा ही कोई व्यक्ति द्विज बनता है।" उनके अनुसार पुरूष व स्त्री तब विवाह करें, जब वे ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर चारों वेदों या कम से कम एक वेद का सांगोपांग अध्ययन कर चुके हो। उनके अनुसार शिक्षण संस्थाओं में सब विद्यार्थियों को एक समान भोजन, वस्त्र, निवास तथा शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षा के काल में विद्यार्थियों में धनी व निर्धन, ब्राह्मण व शूद्र व अछूत का कोई भेद नन कर सबके प्रति एक सदृश व्यवहार किया जाना चाहिए। स्वामीजी ने शिक्षण संस्थाओं की एक ऐसी परिकल्पना संसार के सम्मुख प्रस्तुत की थी जिसके द्वरा सब सामाजिक समस्याओं का समाधान सम्भव था। उनके अनुसार शिक्षा वह है जिससे विद्या, सभ्यता, धर्म और संयम की वृद्धि हो, अज्ञानता का नाश हो। (दयानंद सरस्वती, 1962 : 563)

30 अक्टूबर, 1883 ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती की मत्यु के बाद आर्य समाज के आंदोलन को प्रभावशाली बनाने के लिए आर्य समाज ने उनकी स्मृति में दयानंद आश्रम, एंग्लो वैदिक स्कूल, कॉलेज, आर्य कन्या विद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर जनसाधारण को वैदिक धर्म और संस्कृति को जोड़ने का प्रयास किया था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का देहावसान अजमेर में हुआ था। अपने उत्तराधिकारी के रूप में स्वामी जी ने वही 'परोपकारिणी सभा' स्थापित की थी। अतः स्वामी जी के स्मारक रूप में किसी शिक्षणालय की स्थापना का सर्वाधिक उत्तरदायित्व उसी पर था। इसलिये स्वामी के निधन के बाद हुई परोपकारिणी सभा की पहली बैठक में श्री महादेव गोविन्द रानाडे ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि स्वामीजी के नाम पर एक दयानन्द आश्रम खोला जाये, जिसमें पुस्तकालय, अंग्रेजी वैदिक पाठशाला, विक्रयार्थ पुस्तकों का भण्डार, अनाथालय, संग्रहालय, प्रिटिंग प्रेस और व्याख्यानगृह रह। उस समय तक शाहपुराधीश नाहरसिंह ने आना सागर के तट पर स्थित अपना बाग सभा को प्रदान कर चुके थे मगर यह स्थान अजमेर नगर से दूर था, अतः अजमेर के केसरगंज क्षेत्र में सभा द्वारा भूमि क्रय कर ली गयी और वहाँ 'दयानन्द आश्रम' स्थापित किया गया।

आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं

दयानंद आश्रम एंग्लो वैदिक स्कूल – अजमेर में परोपकारिणी सभा द्वारा दयानंद आश्रम की योजना तैयार की गई थी, उसमें प्रमुख स्थान एक शिक्षणालय को भी दिया गया। इस शिक्षण संस्था को 'दयानंद आश्रम एंग्लो वैदिक स्कूल' नाम दिया गया और इसकी स्थापना 10 फरवरी, 1886 ई. के दिन हुई थी। इस स्कूल की स्थापना के निम्न उद्देश्य थे –

1. हिन्दी साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और उसे उन्नत बनाना।
2. वेद और संस्कृत साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
3. अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान के अध्यय को सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दृष्टि से प्रोत्साहित करना।
4. छात्रों को तकनीकी शिक्षा के लिए साधन उपलब्ध करवाना आदि।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***
Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल

अजमेर के डी.ए.ए.वी. स्कूल ने भी उसी पाठ विधि को अपना लिया, जिसका निर्धारण लाहौर डी.ए.वी. स्कूल के लिये किया गया था। अजमेर का यह स्कूल कालान्तर में मिडिल स्कूल व हाई स्कूल की स्थिति प्राप्त कर ली। पंजाब की डी. ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की ख्याति के कारण बाद में अजमेर में इस शिक्षणालय का नाम भी डी.ए.वी. स्कूल हो गया। बाद में सब जातियों तथा सम्प्रदायों के विद्यार्थी इसमें प्रविष्ट होने लगे, कुछ ही वर्षों में इस स्कूल ने इतनी उन्नति कर ली थी कि इसमें विद्यार्थियों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। फलतः केसरगंज से लगभग दो मील दूरी पर रामगंज में इस विद्यालय के लिए प. जियालाल के प्रयत्न से भूमि प्राप्त करके नये भव का निर्माण किया गया। कालान्तर में पं. मिटठनलाल भार्गव, श्री दत्तात्रेय वाब्ले तथा पं. जियालाल के प्रयासों से अजमेर में 1942 ई. में डी.ए.वी. कॉलेज का भी श्री गणेश हुआ। आज इस कॉलेज ने राजस्थान की सबसे बड़ी एवं सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण संस्था की स्थिति प्राप्त कर ली।

19वीं सदी के मध्य भाग में स्त्रियों की शिक्षा के लिए देश में पुराने ढंग की कोई पाठशाला नहीं थी। परवर्ती काल में सामान्य जनता में यह विश्वास प्रबल था कि महिलाओं को शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। इससे उनका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है। वे विधवा हो जाती है। इस अंधविश्वास के कारण उस समय कोई भी माता पिता अपनी कन्याओं को शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं होते थे। यदि कोई ऐसी शिक्षा देने का प्रयास करता था तो उसका न केवल उग्र विरोध किया जाता था बल्कि उसे गालियां दी जाती थी। उस पर व्यंग्य कसे जाते थे। से जाति से बहिष्कृत करने की धमकी दी जाती थी। उस समय सर्वत्र कन्याओं की शिक्षा पर ईसाई मिशनरियों का पूर्ण प्रभुत्व था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने ऐसी पुरातनवादी परम्पराओं का प्रबल विरोध किया तथा वैदिक प्रमाणों एवं ऐतिहासिक उदाहरणों द्वारा स्त्रियों को शिक्षा देने का समर्थन किया। दयानंद सरस्वती ने सामाजिक पुनरूत्थान म स्त्री शिक्षा के अंतर्गत उन्हें साक्षर बनाने के साथ–साथ वेद–वेदांग पढ़ने और गृहपयोगी कलाओं के प्रशिक्षण आदि पर भी बल दिया जिससे स्त्रियां धर्म का पालन कर अधर्म (कुरीतियों, पाखण्डों–आडम्बरों) से बच सके। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में जब प्रवेश किया तो उन दिनों हिन्दू समाज में स्त्रियों को शिक्षा देना आवश्यक नहीं माना जाता था। आर्य समाज ने कन्याओं की शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का विकास किया इन्हें प्रधान रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है – कन्या गुरूकुल तथा पुत्री पाठशालाएं।

राजस्थान सहित अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज ने स्त्रियों में आत्म चेतना, स्वावलम्ब एवं संगठन की भावना उत्पन्न करने तथा उनके प्रति सामाजिक मोवृत्ति को बदलने के लिए आर्य कन्या पाठशाला आंदोलन चलाया। इस हेतु निम्न आर्य कन्या पाठशालाएं स्थापित की गई –

आर्य पुत्री पाठशाला, अजमेर

आर्य समाज, अजमेर ने 27 फरवरी, 1898 ई. को राजस्था में प्रथम आर्य पुत्री पाठशाला अजमेर में स्थापित की। जिसका उद्देश्य धार्मिक व आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ छात्राओं का मानसिक–शारीरिक व बौद्धिक विकास कर हिन्दू संस्कृति में विश्वास व चेतना उत्पन्न करना था। (आर्य पुत्री पाठशाला, वार्षिक रिपोर्ट, सितम्बर, 1898–99 : 1)

श्रीमती गोदावरी आर्य कन्या पाठशाला, ब्यावर

इसकी स्थापना श्रीमती गोदावरी स्वर्णकार ने छात्राओं को गृहकार्य में दक्ष करने तथा आत्मनिर्भर बनाने के लिए 6 मार्च, 1913 को ब्यावर में की। शिक्ष का माध्यम हिन्दी एवं संस्कृत था, धार्मिक शिक्षा सभी छात्राओं के लिए अनिवार्य थी। अक्टूबर, 1913 ई. में स्कूल को आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन कर दिया गया।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: ***Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh***
Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

आर्य कन्या पाठशाला, अजमेर

मथुरादासमाहेश्वरी की पती श्रीमती गुलाब देवी ने अप्रेल, 1898 ई. में अपने भवन केसरगंज अजमेर में इस आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की। इसमें छात्राओं को स्वावलम्बन की शिक्षा जैसे – चटाई, निवार बुनना, सिलाई सिखाना, चरखा कातना आदि निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी और धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी। मार्च, 1921 में इसे आर्य समाज अजमेर के अधीन कर दिया गया।

लड़कों की शिक्षा के लिए आर्य समाज ने डी.ए.वी. और लड़कियों की शिक्षा के लिए आर्य कन्या पाठशाला आंदोलन चलाया। डी.ए.वी. आंदोलन विशेष रूप से ईसाईयों के शिक्षा प्रचार की चुनौतियों का प्रत्युत्तर था। जिसका उद्देश्य वैदिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के साथ संस्कृत के प्राचीन साहित्य के अध्ययन पर बल देकर नैतिक तथा आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रचलन को प्रोत्साहित करना था। सरकार पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हुए आर्य समाज ने इन विद्यालयों के द्वारा हिन्दी भाषा के आंदोलन को लोकप्रिय बनाया। डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं से निकले छात्रों ने ही 1930 ई. के बाद तेजी से बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों में गांधीवाद से प्रेरित प्रजा मण्डल के आंदोल का नेतृत्व किया।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा सकता है कि आर्य समाज द्वारा राजस्थान के अजमेर–मेरवाड़ क्षेत्र में आर्य कन्या पाठशाला आंदोलन विशेषतया स्त्रियों में आत्म चेतना उत्पन्न करने के आशय से चलाया गया था। स्त्रियों को अक्षर ज्ञान कराना, वेदाध्ययन व यज्ञ हवन करने का अधिकार देना, हिन्दी साहित्य में रूचि उत्पन्न करना, गृहकार्य सिखाना, हिन्दू संस्कृति में विश्वास उत्पन्न करना, सामाजिक कुरीतियों पुराणापंथी मनोवृत्तियों व अंधविश्वासों के विरूद्ध चेतना उत्पन्न करना आदि कार्यों तक यह आंदोलन सीमित था। सामाजिक पुरूत्थान के क्षेत्र में स्त्रियों में एकता और संगठन की प्रवृत्ति उत्पन्न करने तथा स्त्रियों के प्रति सामाजिक मनोवृत्ति को बदलने में यह आंदोलन प्रभावी और प्रगतिशील रहा।

इस प्रकार अजमेर–मेरवाड़ा की बौद्धिक चेतना मे विकास में आर्य समाज के सामाजिक व शैक्षिक आंदोलन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। समाज में ईसाई मिशनरियों के बदले हुए प्रभाव को कम करने में आर्य समाज का शैक्षिक आंदोलन सफल रहा। आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्रा ने ही जनजागृति के आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

सन्दर्भ

- सिंह, बाबा छज्जू (अनु.), ऑटोबायोग्राफी ऑफ दयानन्द सरस्वती, द भाग 2, 1967
- कार्टिन, हेनरी, नारायण, गणेश (अनु.), न्यू इण्डिया, राजस्थान वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, 1905
- एण्ड्रयूज, सी., द इण्डियन रेनेंसां, ऑक्सफोर्ड प्रेस, लन्दन, 1922 ई.
- हेमसैथ, एच. चार्ल्स, इण्डियन नेशनेलिज्म एण्ड हिन्दू सोशल रिफार्म, प्रिन्स्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, मुंबई, 1964 ई.
- शर्मा, हरिकिशन, शुद्धि और संगठन, राजपूताना प्रेस, अजमेर, 1941
- आर्य समाज की शुद्धि विविध 1898 ई., राजस्थान वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, 1899 ई.
- शारदा, चांदकरण, निजी फाईल ब्यावर से अपनी पत्नी सुखदा को 17 अक्टूबर व 25 अक्टूबर 1929 को लिखा पत्र, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
- सेन्सज रिपोर्ट ऑफ मेरवाड़ा, 1931, ई., जिला अभिलेखागार, अजमेर
- राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा, अजमेर, पंचवर्षीय विवरण, नवम्बर, 1935 से 1940 ई., जिला अभिलेखागार, अजमेर
- शारदा, हरबिलास, कमेमोरेशन वोल्यूम ऑफ दयानन्द सरस्वती, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1943 ई
- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 1989–90, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर
- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान वार्षिक रिपोर्ट, 1996–97, जिला अभिलेखागार, अजमेर

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh**

Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022

- ढोंढियाल, बी.एन., अजमेर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1974
- नरूला एण्ड नायक, हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड
- आर्य स्त्री समाज, अजमेर, रिपोर्ट 1928–29, ई., जिला अभिलेखागार, अजमेर
- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, फाईल न. 12, नवम्बर 1904 से दिसम्बर, 1905 तक (हस्तलिखित), जिला अभिलेखागार, अजमेर
- श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर की वार्षिक रिपोर्ट, 1932–33, जिला अभिलेखागार, अजमेर
- दयानंद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्य प्रकाशन, अजमेर
- आर्य पुत्री पाठशाला, वार्षिक रिपोर्ट, सितम्बर, 1898–99, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1899

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author*: *Varsha Sain and Dr. Ashutosh Singh

Submitted: 5 June 2022, Revised: 09 June2022, Accepted: 18 July 2022, Published:31 July 2022